बालिका भ्रूण हत्या

हे माँ मै हूँ कोख मे तेरे, पर मुझको डर क्यों लगता है?
नही देख पाऊँगी दुनिया, ऐसा भय फिर क्यों जगता है?
तेरा खून पिया है मैने, आभारी हूँ इस जीवन का,
बनूँ सेविका तेरी ही माँ, ऐसी चाहत मेरे मन का,
रुठेगा फिर आज विधाता, बुद्धि हरण तेरा कर देगा,
तुम्ही नही चाहोगी मुझको, ऐसा मन में क्यों जगता है?
हे माँ मै हूँ कोख मे तेरे, पर मुझको डर क्यों लगता है?
जीवन लेने औ देने का, तुम्ही दुआ और दवा को जानी,
मै तो केवल दिव्य दृष्टि से मातु पिता अपनी पहचानी,
तेरा आंचल गोद तुम्हारा, कवच रहा है मै सुनती हूँ,
नही मिलेगा मुझे कवच सुख, ऐसा पल–पल क्यों लगता है?
हे माँ मै हूँ कोख मे तेरे, पर मुझको डर क्यों लगता है?
एक बार तो पापा से कह, जग मे मुझको तो आने दो,
कुल कुटुम्ब के साथ चहककर, किलकारी को बरसाने दो,
अगर भगवती जन्म न ले तो, सृष्टि संतुलन का फिर क्या हो,
बात जानकर भी तुम चुप हो, ऐसा हर पल क्यों लगता है।
हे माँ मै हूँ कोख मे तेरे, पर मुझको डर क्यों लगता है?